*जिनशासन की प्रभावना हेतु वर्तमान में संचालित पाठशालाओं को कैसे सुचारु और सारगर्भित रूप से चलाया जाए ✏

पाठशाला का उद्देश्य

जिनागम में संस्कारों का महत्व मोक्ष प्राप्ति है।यद्यपि प्रत्येक जीव ज्ञान का अनन्त भंडार है तथापि ज्ञानावरण -दर्शनावरण कर्मों के उदयकाल में भी धर्म के संस्कार ,क्रियाकलाप,उदबोधन, कर्मों की कड़ी तोड़ने में निमित्त हैं।वर्तमान काल में आचरणहीनता,धार्मिक क्रियाकांड,धर्म विमुखता को देखते हुए घरों घर पाठशाला होना आवश्यक है ।प्रत्येक सदस्य अध्ययन से जुड़े , प्रत्येक जीव का वर्तमान और भविष्य मोक्षमार्ग में तत्पर हो।

✏ *पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएं*

पंचपरमेष्ठी भगवान हमारे आदर्श है।उपाध्याय परमेष्ठी शिक्षक है।अतः शिक्षक ऐसे हों--

1तत्वरूचिसम्पन्न,अध्ययनप्रिय,हंसमुख2आधुनिक शिक्षा तकनीकी का ज्ञाता

3स्नेह, वात्सल्य से मन बहला लेने वाला

4सिद्धान्तों को सरलतम रूप से समझाने वाला ताकि जिज्ञासु वृत्ति विकसित हो

✏ *वर्तमान समय अनुसार, किस पद्धति से बच्चों को पढ़ाया जाए?*

1अत्याधुनिक गैजेट्स का सुविधानुसार प्रयोग

2क्रमबद्ध पाठ लेखन जो ,रोचक हों।

3आधुनिक स्कूल की समस्त शैक्षिक तकनीकी का प्रयोग हो।

4प्रायोजना कार्य मौलिक कला,क्रिया,अनुसन्धान प्रवर्तित हों।

5समस्त विधाओं में पाठ रचना।

6पुरुस्कार प्रोत्साहन निष्पक्ष हो

सारांशतः वीतरागता ही हमारा उद्देश्य हो।

डॉ मनीषा जैन

w/o श्री दिलीप जैन,सिंघई सॉ मिल छोटा तालाब छिन्दवाड़ा (मध्यप्रदेश)480001

मो .9826449970

mainmanishajain@gmail.com